thearyasamaj.org

ओ३म्

वार्षिक शुल्क 50/- रु.
आजीवन 500/- रु.
इस अंक का मूल्य 5/- रुपये

आर्य प्रेरणा

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(आर्यसमाज राजेन्द्र नगर का मासिक मुख-पत्र)
दूरभाषः 011-25760006 Website - www.aryasamajrajindernagar.org
वर्ष-7 अंक 11, मास नवम्बर 2014 विक्रमी संवत् 2071
दयानन्दाब्द 189 सृष्टि संवत् 1960853115, सम्पादक डॉ. कैलाश चन्द्र शास्त्री एवं आचार्य अंकित शास्त्री

यज्ञ में वेद मंत्रों से ही आहुति क्यों?

– डॉ. गंगा शरण आर्य

हवन प्रक्रिया के साथ-साथ मंत्रों का उच्चारण क्यों किया जाता है इसका महर्षि दयानंद ने "सत्यार्थ प्रकाश" में उत्तर देते हुए लिखा है "मन्त्रों में वह व्याख्यान है कि जिससे होम करने के लाभ विदित हो जाए और मंत्रों की आवृति होने से कण्ठस्थ रहे, वेद-पुस्तकों का पठन-पाठन और रक्षा भी होवे" महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने "ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका" के वेद विषय में यज्ञ के समय मंत्रोच्चारण के साथ बताते हुए लिखा है "उनके पढ़ने से वेदों की रक्षा, ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना होती है तथा होम से जो-जो फल होते है उनका स्मरण भी होता है। वेद मंत्रों के बारम्बार पाठ करने से वे कण्ठस्थ भी रहते हैं और ईश्वर का होना भी विदित होता है कि कोई नास्तिक ना हो जाए, क्योंकि ईश प्रार्थनापूर्वक ही सब कर्म आरंभ होते हैं सो वेदमंत्रों के उच्चारण से यज्ञ मं उसकी प्रार्थना सर्वत्र हो जाती है। इस लिए सब उत्तम कर्म वेदमंत्रों से ही करना उचित है।" लेकिन देखा जाता है कि दीर्घकाल से पौराणिक पण्डे-पुजारी यज्ञादि अनुष्ठान कराते समय ॐ नमः शिवायः स्वाहा, ॐ गणेशाय नमः स्वाहा आदि अनेकों मनघडंत, अवैदिक वाक्यों को वेद मंत्रों की संज्ञा देकर यज्ञ में आहुति डलवाकर भोली-भाली जनता को उल्लू बनाते जा रहे हैं वो भी अपने अज्ञान को छिपाने के लिए केवल उदरपूर्ति हेतु। आप किसी को प्रीतिभोज का निमंत्रण दें और उसका मधुर शब्दों से स्वागत करने के स्थान पर व्यंग्यपूर्ण कटु शब्दों से उसकी अवमानना करें तो उसके लिए सारे स्वादिष्ट व्यंजन व्यर्थ हो जाते हैं। इसके विपरीत यदि रूखा-सूखा भोजन भी प्रेमपूर्वक मधुर वार्तायुक्त सत्कार की भावना से अतिथि को परोसा जाए तो वह मुस्कान के साथ तो उस भोजन को स्वीकार करता ही है साथ ही उस भोजन का गुणकारी पोषण भी उसे प्राप्त होता है। यज्ञ में भी देवताओं (पृथ्वी, जल, वायु, आकाश आदि) का प्रीतिभोज के समान ही आह्वान किया जाता है।

भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण तो कतिपय भौतिक क्रियाओं तथा यज्ञ की गैसीय प्रतिक्रियाओं से दूर हो जाते हैं, किन्तु ध्वनि-प्रदूषण सर्वाधिक सूक्ष्म प्रभावकारी होता है। विश्व में कही भी एक शब्द बोला जाता है तो वह सूक्ष्म विद्युत चुम्बकीय तरंगों में रूपान्तरित होकर सारे आकाश में फैल जाता है, तभी तो दूरदर्शन या आकाशवाणी से वही शब्द सारे विश्व में एक साथ एक ही समय में प्रसारित हो तो हैं। पृथ्वी के शोर, चीख-पुरार, नारेबाजी, चीत्कार, ध्वनि विस्तारक यंत्रों से ध्वनि प्रदूषण आकाश में भर जाता है, इस आकाश-प्रदूषण का परिशमन किन शब्दों में संभव है? वेदमाता की वाणी से ही संभव है ऐसा क्यों? क्योंकि यज्ञ करते समय हम जो वेद मंत्रों का पाठ करते हैं उन मंत्रों की ध्वनि तरंगे हमारे शरीर, मस्तिष्क, मन और आत्मा पर विशेष प्रभाव डालती हैं साथ-साथ वातावरण में जाकर समस्त वातावरण की दूषित ध्वनियों को समाप्त करती हैं तथा मधुरता व सरसता का प्रसार करती हैं क्योंकि मंत्र एक प्रतिरोधात्मक शक्ति होती हैं एक मंत्र जाप एक प्रकार की चिकित्सा पद्धति है। वर्तमान में शब्द ध्वनि का उपयोग आधुनिक चिकित्सा में नवीनतम पद्धति के रूप में किया जाने लगा है, जिसे अल्ट्रासोनिक वेव्स ट्रीटमेंट या शब्द ध्वनि तरंग उपचार कहते हैं। अल्ट्रासाउंड आदि यंत्रों द्वारा न केवल शरीर के आंतरिक अंगों की दशा का ज्ञान लिया जाता है अपितु प्रभावित अंगों पर मंत्र द्वारा तरंगों (स्वर लहरियों) के स्पर्श से उसकी पीड़ा आदि को दूर कर दिया जाता है।

पराबैंगनी (अल्ट्रासोनिक) या सुपरसोनिक ध्वनि तरंग में यंत्र के मध्यम से साउंड ध्वनि को केंद्रित किय जाता है इन शब्द लहरियों में इतना बल होता है कि शब्द लहरियों को केंद्रित करने वाले इन यंत्रों से जब पीड़ा वाले स्थानों को कई दिन तक 5-7 मिनट के लिए छुआ जाता है तब ये दर्द चले जाते हैं। किसी भी बड़े चिकित्सालय में जाकर इस बात का पता तथा अनुभव प्राप्त

'आर्य-प्रेरणा' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

thearyasamaj.org

किया जा सकता है। वेद मंत्रों का उच्चारण क्या है? यह स्वर लहरियों साउंड वेव्स का ही तो वायु मंडल में प्रसारण है। अगर यंत्र के द्वारा पराबैंगनी अल्ट्रासोनिक वेव्स से रोग दूर किया जाता सकता है, तो वेद मंत्रों के एक खास प्रकार के उच्चारण से ऐसी लहरें उत्पन्न कर देना जिनसे रोग का निवारण हो, कोई आश्चर्य की बात नहीं कोई समय रहा होगा जब वेदपाठी इस विधि को जानते थे, परन्तु वेद मंत्रों द्वारा वायुमंडल को तथा मानव को प्रभावित कर देना आजकल के पराबैंगनी (अल्ट्रासोनिक वैव्स) द्वारा उपचार के ही समान हैं। मंत्र साधना के सहारे प्रतिकूल प्रकम्पनों से बचा जा सकता है। जिस तरह रसायन शास्त्री यह जानता है किन-किन रसायनों के मेल से क्या नवीन व विशिष्ट रसायन बनता है वैसे ही ध्वनि वैज्ञानिक को यह भास होता है कि किन-किन शब्दों के संयोजन से किस-किस तरह ही तरंगें पैदा होती है। वे पर्यावरण में व्याप्त परमाणुओं को कैसे प्रकम्पित करती हैं और उसकी परिगति किस प्रकार होगी। आज से लाखों वर्ष पूर्व वैदिक ऋषियों ने भी इसी विज्ञान के आधार पर मंत्रों की संयोजना की थी जिसे आधुनिक काल का वैज्ञानिक प्रमाणिक मानता है। मंत्र ध्वनि के विशिष्ट समूह होते हैं। लगातार वही मंत्र उच्चारण करते रहने से वातावरण में उन ध्वनि तरंगों का विशेष प्रभाव उत्पन्न हो जाता है। यही मंत्रों का परिणाम है।

जब शब्दों का उच्चारण होता है तब उनसे आकाश में कंपन उत्पन्न होता है। कंपन समस्त लोक परिक्रमा कर लेती है और अनुकूल तरंगों को पाकर उससे मिल जाती है उसके संयुक्त प्रभाव से साधक की इच्छा को मूर्तरूप मिल जाता है। यज्ञ में वेद मंत्रों के उच्चारण का प्रयोजन भी तो उनके विशिष्ट छन्द स्वर के नियत उच्चारण से ऐसी शब्द लहरें उत्पन्न कर देना है जिससे न केवल आधि-व्याधियों का निवारण ही हो, प्रत्युत सम्पूर्ण आकाश ऐसे विषाणुओं से मुक्त होकर स्वच्छ व हितकारी बना रहे। यज्ञ कुण्ड में डाली गई श्रद्धा पूर्वक सामग्री जब अग्नि में जाकर सूक्ष्म रूप धारण करती है तब वह वैदिक मंत्रों की ध्वनि से मिलकर वातावरण में व्याप्त हो जाती है। इसकी सूक्ष्म विद्युतीय तरंगे एक ओर वातावरण का परिशोधन करती हैं वहीं दूसरी ओर मानवीय मन में संव्याप्त ईर्ष्या, द्वेष, कुटिलता, पाप अनीति, अत्याचार, वासना, तृष्णा आदि मानसिक विकारों क्लेशों को दूर करती है। आत्मा को शुद्ध कर बलवान बनाती है। परमात्मा के सामीप्य का आनंद प्राप्त कराती है।

मंत्रों का वैज्ञानिक आधार प्रसिद्ध डॉ. आर.बी. ध्वन के अनुसार यह सच है कि मंत्रोच्चारण से हमारे मन और दिमाग को अपार शक्ति मिलती है भौतिकी के सिद्धान्तों के आधार पर इसे दो रूपों में अध्ययन किया जा सकता है शब्दों की ध्वनि व आंतरिक विद्युत धारा। अध्यात्म और ज्योतिष विज्ञान के विद्वानों के अनुसार आधुनिक विज्ञान की परिभाषिक शब्दावली में इसे अल्फा तरंग कहा जा सकता है। कहते हैं कि मंत्रोच्चारण से आंतरिक विद्युत धारा प्रवाहित होती है। दरअसल, शब्दों की ध्वनि आर्तरिक विद्युत धारा प्रवाहित करती है। जब किसी मंत्र का उच्चारण किया जाता है तो ध्वनि उत्पन्न होती है, जिससे कम्पन होता है। यह ध्वनि कम्पन के कारण तरंगों में परिवर्तित होकर वातावरण में व्याप्त हो जाती है। इसके साथ ही आर्तरिक विद्युत भी (तरंगों में) इस में व्याप्त अथवा निहित रहती है यह शब्द की लहरों को व्यक्ति विशेष और दिशा विशेष की ओर भेजती है। यह इच्छित कार्य को पूर्ण करने में सहायता करती है अब प्रश्न उठता है कि यह आर्तरिक विद्युत किस प्रकार जनरेट होती है? कई अनुसंधानों से यह बात सामने आई है कि ध्यान, ममन, चिन्तन आदि की अवस्था में रासायनिक क्रियाओं के फलस्वरूप शरीर में विद्युत जैसी एक धारा प्रवाहित होती है (इसे हम शारीरिक विद्युत कह सकते हैं) और मस्तिष्क से विशेष प्रकार का विकिरण उत्पन्न होता है जिसका नाम अल्फा तरंग (इसे हम मानिसिक विद्युत कह सकते हैं) रखा गया है। यही अल्फा तरंग मंत्रों के उच्चारण करने पर निकलने वाली ध्वनि के साथ गमन कर दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करती है या इच्छित कार्य करने में सहायक होती है। जिस उद्देश्य से मंत्र जपा जा रहा है उसमें सफलता दिलाने में यह सहायक सिद्ध होती है इस अल्फा तरंग को ज्ञान धारा भी कह सकते हैं।

दिल्ली के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. डब्लू. सेल्वामूर्ति ने अपने शोधपत्र "फिजियोलॉजिकल इफेक्ट्स आफ मंत्राज ऑन माइण्ड एण्ड बॉडी" में लिखा है कि अग्निहोत्र (यज्ञ) के मंत्रों का मनुष्य की फिजियोलॉजी तथा नर्वस सिस्टम तंत्रिका तंत्र पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। इसे उन्होंने न्यूरोफिजियोलॉजिकल प्रभाव की संज्ञा दी है। उन्होंने कहा कि अग्निहोत्र करने से शरीर का तापमान सामान्य से एक डिग्री सेंटीग्रेट कम हो जाता है, इससे मानसिक शान्ति मिलती है, तनाव दूर होता है, और मस्तिष्क विश्रान्ति की अवस्था में पहुँच जाता है, जिसे विज्ञानवेत्ता "अल्फा स्टेट" के नाम से सम्बोधित करते हैं। यज्ञ से उल्फा तरंगो में बीस प्रतिशत तक की वृद्धि देखी गयी है। इस प्रयोग-परीक्षण के लिए आठ स्वस्थ व्यक्तियों का चयन किया गया और उन पर दो दिन अग्निहोत्र का प्रयोग किया गया। प्रथम दिन बिना मंत्र के तथा दूसरे दिन सस्वर मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ सम्पन्न किया गया। इस बीच आठों व्यक्तियों के विभिन्न कार्यकीय परिवर्तनों जैसे-हृदयगति, ई.ई.जी., रक्तचाप, जी.एस.आर आदि का संबंधित अत्याधुनिक मशीनों उपकरणों से जांच-पड़ताल व प्रमापन किया गया। इन परीक्षणों में पाया गया कि यज्ञीय वातावरण सुक्ष्मीकृत एवं वायुभूत वनौषधियों एवं मंत्रोच्चार के प्रभाव से हृदयगति शान्त हो गई। शरीर का तापमान एक डिग्री सेंटीग्रेट कम हो गया। जी.एस.आर. भी उस समय बढ़ा हुआ पाया गया। ई.सी.जी. में भी परिवर्तन मापा गया 'डेल्टा' मस्तिष्कीय तरंगों में कमी तथा 'अल्फा स्टेट' के कारण विशेष रूप से पाये गये।

यज्ञ की प्रभावी क्षमता का प्रमुख कारण यह है कि यज्ञाग्नि में मंत्रोच्चारण के साथ जो हव्य पदार्थ, वनौषधियाँ आदि आहुति के रूप में डाली जाती है वे सुक्ष्मीकृत होकर लयबद्ध मंत्रोच्चार से उत्पन्न उच्च आवृति की ध्वनि तरंगों के साथ मिल जाती है। इस प्रकार उत्पन्न उच्चस्तरीय संयुक्त ऊर्जा तरंगों का स्थायी व दीर्घकालिक प्रभाव बना रहता है। अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. हार्वर्ड सितगुल ने अपने अनुसंधान निष्कर्ष में बताया है कि अकेले "गायत्री महामंत्र" में ही इतनी प्रचण्ड सामर्थ्य है कि उसके सस्वर उच्चारण से मानसिक विक्षोभों-दुर्भावनाओं का शमन किया जा सकता है। उन्होंने गायत्री महामंत्र के सस्वर उच्चारण के एक सेंकड में एक लाख तरंगे उत्पन्न होने का मापन करके यह रहस्योद्घाटन किया है। नवभारत टाइम्स समाचार पत्र सितम्बर 2007 के अंको में तीन लेख छपे थे:- 1. चीन के एक किसान

thearyasamaj.org

ने अपनी पैदावार बढ़ाने के लिए पौधों को क्लासिकल, म्यूजिक सुनाता था जिससे उसकी पैदावार 7 प्रतिशत बढ़ गइ। 2. स्प्रिचअलिटी से होती है स्ट्रेस बस्टिंग (तनाव मुक्ति)। इससे आपका जिंदगी को देखने का तरीका बदल जाता है। तनाव दूर हो जाता है। 3. कनाडा के शोधकर्ताओं के अनुसार म्यूजिकल से याददाश्त, सीखने की क्षमता तथा आई क्यू बढ़ जाते हैं उपर्युक्त तीनों समाचारों से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि संगीत का हमारे शरीर तथा मन पर कितना प्रभाव पड़ता है यज्ञ करते समय वैदिक मंत्रों का सस्वर पाठ हमारे मन मस्तिष्क को विशेष शान्ति प्रदान करता है।

हवन कुण्ड के चारों ओर बैठे याज्ञिक गण जब वेद पाठ करते हैं तो उससे स्वतः ही एक प्रकार का प्रणायाम होने लगता है। परिणाम स्वरूप असीम सौरभ युक्त प्राणपद वायु वेद- पाठियों के फेफड़ों में भर जाती है और उन्हें निरोगी बना देती हैं। यज्ञ के भौतिक लाभ के साथ-साथ आध्यात्मिक लाभ भी होते हैं। यज्ञ में जो आहुति डाली जाती है उसके दो भाग हो जाते हैं। एक स्थूल भाग जो सूर्य आदि को प्राप्त हो जाता है, दूसरा भाग संस्कार रूप में हमारे चित पर पड़े हुए सुसंस्कारों को छिन्न-भिन्न करता है यज्ञ का यह सूक्ष्म भाग हमारे सूक्ष्म शरीर को पवित्र करता है हवन की वैज्ञानिकता यह है कि इसका स्थूल भाग भौतिक शुद्धि करता है तथा सूक्ष्म भाग आध्यात्मिक शुद्धि, श्रद्धा-भक्ति और तन्मयता से दी हुई आहुतियाँ सबके हृदय मंदिर में चुपचाप प्रवेश करती जाती है और हृदय के कलुषित विचारों की सफाई करती जाती है और उसके स्थान पर पुनीत भावनाओं का अभ्युदत व निःश्रेयस की सिद्धि होती है। यज्ञ करते समय मंत्रों का जाप हमें अनेक शारीरिक व मानसिक लाभ पहुँचाता है इन मंत्रों में सबसे प्रमुख शब्द 'ओ३म्' है जो कि ईश्वर का निज नाम है उसके बारम्बार उच्चारण करने से अनेक मानसिक व्याधियाँ शान्त हो जाती हैं तदन्तर गायत्री मंत्र मुख्य मंत्र माना जाता है। स्वामी संकल्पानन्द जी ने अपनी पुस्तक "गायत्री महिमा" में लिखा है। इसके जाप से हमारे शरीर में विद्यमान दस प्राणों की रक्षा होती है इसमें स्तुति प्रार्थना, तथा उपासना तीनों सम्मिलित हैं इसके उच्चारण से कु-विचारों से बचा जा सकता है इससे बुद्धि तत्व तीव्र व तीक्ष्ण होने लगता है इस प्रकार अग्निहोत्र में प्रयुक्त अन्य सैंकड़ों मंत्र भी इसी प्रकार लाभकारी हैं।

"मंत्र" शोधक संयंत्र की तरह काम करता है जैसे झाड़ू, कमरे में स्थित कचरे को साफ करता है वैसे ही मंत्र हमारे अन्तःकरण में स्थित बाधक तत्वों को दूर करने में मदद करता है। मंत्र की पुनरावृत्ति से अन्तःकरण या चेतना में हलचल उत्पन्न होती है। यह हलचल कुसंस्कारों और सुसंस्कारों में परस्पर टकराव उत्पन्न करती है और जैसे-जैसे जाप क्रिया बढ़ती जाती है वैसे-वैसे व्यक्ति में कुसंस्कारों एवं असद्वृत्तियों का पराभव होने लगता है अर्थात् चित में पड़े कुत्सित संस्कार भविष्य में उसे क्रियाशील करने में अक्षम होते जाते हैं क्रियान्वयन के समय हमेशा सद्विचारों की विजय होती है। यही कारण है कि हमारे वैदिक धर्म में गर्भाधान से लेकर अन्तेष्टि पर्यन्त 16 संस्कारों का महत्त्व है जिनके करने से हमारे पुराने कुसंस्कार हमें वैसे कार्य करने में प्रेरित नहीं कर पाते क्योंकि नए श्रेष्ठ संस्कार हमारे अन्दर, हमारे सूक्ष्म शरीर में समाहित होते रहते हैं। ये है मंत्र जाप के लाभ। जब हम यज्ञ करते हैं तो मंत्रोच्चारण करते हैं अतः समस्त लाभ यज्ञ में बोले जाने वाले वेद के पवित्र मंत्रों द्वारा ही होते हैं अन्य अवैदिक वाक्यों से नहीं क्योंकि अन्य के पाठ में यह प्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता। ईश्वर के वचन से जो सत्य प्रयोजन सिद्ध होता है, सो अन्यों से कभी नहीं हो सकता। क्योंकि जैसा ईश्वर का वचन सर्वथा भ्रान्ति रहित सत्य होता है वैसा अन्य का नहीं सो यज्ञ में वेदमंत्रों के उच्चारण से जहाँ शारीरिक लाभ मिलते हैं वही अनगिनत मानसिक लाभ भी हमें अनायास ही प्राप्त होते रहते हैं-

1. वेद पाठ को संयुक्त राष्ट्र संघ के शिक्षा एवं सांस्कृतिक संगठन द्वारा वेद पाठ को अन्तर्राष्ट्रीय मान्यता प्रदान करते हुए इसे मानव सभ्यता की अलौकिक विरासत घोषित किया गया।

2. वेद पाठ हृदय के लिए शक्तिदायक-युनेस्को द्वारा 7 नवम्बर 2003 को पेरिस में गीत-संगीत की एक अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित की गई। उसमें वेद पाठ की उपयोगिता को हृदय की शान्ति-सांत्वना के लिए सर्वोच्च प्रथम स्थान पर ठहराया गया है।

3. मंत्रो की ध्वनि-तरंगे रोग उपचार में सहायक मंत्रों की ध्वनि तरंगे शरीर व मन पर शक्तिशाली प्रभाव डालती हैं । ये तरंगे रोगों के उपचार में उसी प्रकार सहायता करती हैं, जिस प्रकार फिजोथेरेपी में आल्ट्रासॉनिक या सुपरसॉनिक ध्वनि तरंगो द्वारा शरीर दर्द वाले स्थानों का दर्द दूर किया जाता है।

4. भारत के राष्ट्रपति के द्वारा वेद मंत्रों के व्यापक प्रभाव की चर्चा- वेदमंत्रों के उच्चारण से उत्पन्न स्वर लहरियों द्वारा शरीर के विभिन्न अवयवों पर पड़ने वाले व्यापक लाभकारी प्रभाव के विषय में, भारत के राष्ट्रपति महामहिम श्री ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने, हरिद्वार में उत्तरांचल संस्कृत एकादमी द्वारा आयोजित समारोह में कहा वेद मंत्रों का मानव मस्तिष्क पर व्यापक प्रभाव पड़ता है और इससे मस्तिष्क तरोताजा रहता है। राष्ट्रपति महोदय ने वहाँ वेद मंत्रों की सी.डी. भी मंच से चलवाकर सारे जनसमूह को वेदमंत्रों को सुनने की प्रेरणा दी तथा स्वयं भी खड़े होकर वैदिक मंत्र-पाठ सुनते रहे।

5. डिवाइन लाईफ सोसायटी ऋषिकेश के प्रसिद्ध योगी स्कॉलर स्वामी शिवानंद जी के अनुसार -

Chanting of Mantras destroys the microbes and vivifies the cells and tissues. They are best, most potent aniticeptics and germicides. They are more potent than ultra-violet rays or Rontgen rays.

अर्थात् वेद मंत्रों का गायन-रोगाणुओं को नष्ट कर देता है और कोशिकाओं व ऊतकों को अनुप्राणित करता है उनमें नव-जीवन का संचार करता है। वेद मंत्र सर्वोत्तम, सर्वाधिक शक्तिशाली रोगाणुरोधक और रोगाणुनाशक हैं (रोगों के कीटाणुओं को रोकने और उन्हें मिटाने वाले हैं) वेद मंत्रों का गायन पराबैंगनी व आल्ट्रावायलेट किरणों से भी अधिक ताकत रखता है।

अतः पाठकों से मेरा निवेदन है कि कभी भी अपने घरों में यज्ञ करें अथवा करायें तो ईश्वरीय वाणी सत्यसनातन वेद के पवित्र मंत्रों से ही करें व कराएँ तथा अवैदिक वाक्यों को वेद मंत्रों की संज्ञा देकर यज्ञ अनुष्ठान कराने वाले धन लोलुप पेटार्थी ब्राह्मणों से बचें।

- चरित्र निर्माण मण्डल, सैनी मोहल्ला,
शाहाबाद मोहम्मदपुर, नई दिल्ली-61,
मो. 9871644195

thearyasamaj.org

४ तथा ५ अकों का महत्व

यह लेख मैंने ''प्रारम्भिक शिक्षा'' शीषर्क पुस्तक जिसके लेखक पूज्य स्वामी शान्तानन्द जी सरस्वती हैं, के सहयोग से लिखा है। इस पुस्तक में एक अंक से लेकर सौ अकों तक का महत्व लिखा है। 33 वे अंक में 33 कोटि देवताओं के नाम है तथा सौ अंक में महर्षि दयानन्द के बताये ईश्वर के सौ नामों की व्याख्या है। इसी प्रकार प्रत्येक अंक में बड़े मुख्य-मुख्य विषय हैं जो अति पठनीय हैं। मैं यहाँ चार और पाँच अंकों को लिख रहा हूँ, जो इसी प्रकार है।

1. 4 वर्ण होते हैं :- (1) ब्राह्मण (2) क्षत्रिय (3) वैश्य (4) शूद्र

2. 4 वेद होते हैं :- (1) ऋग्वेद (2) यजुर्वेद (3) सामवेद (4) अथर्ववेद

3. 4 आश्रम होते हैं :- (1) ब्रह्मचर्य (2) गृहस्थ (3) वानप्रस्था (4) संन्यास

4. 4 पुरुषार्थ होते हैं :- (1) धर्म (2) अर्थ (3) काम (4) मोक्ष

5. 4 कर्म होते हैं :- (1) शुभ कर्म (2) अशुभ कर्म (3) मिश्रित कर्म (4) निष्काम कर्म

6. 4 युग होते हैं:- (1) सत्त युग 17,28000 वर्ष (2) त्रेता युग 12,86000 वर्ष (3) द्वापर युग 8,64000 वर्ष (4) कलियुग 4,32000

7. 4 प्राणायाम :- (1) बाह्य (2) आभ्यान्तर (3) स्तम्भ वृति (4) बाह्याभ्यान्तर

8. 4 प्रकार की योनि होती है:- (1) जटायुज (2) अण्डज (3) स्वेदज (4) उद्भिज (स्थावर)

9. 4 प्रकार की सेना:- (1) अश्व (2) गज (3) हाथी (4) पैदल

10. 4 प्रकार की भोजन की पद्धति : (1) भक्ष माहकर खाना जैसे चूर्ण आदि (2) भोज्य - पाँच अंगुली से खाना जैसे दाल, भात आदि (3) लेय - चाट कर खाना जैसे शहद (5) चुष्य - चूस कर खाना जैसे - पका हुआ चोसा आम आदि

11. 4 प्रकार के मनुष्यों से चार प्रकार के व्यवहार

1. सुखी व्यक्ति से - मैत्री का व्यवहार

2. दु:खी व्यक्ति से - दया व करूणा का व्यवहार

3. पुण्यात्मा व्यक्ति से - प्रसन्नता का व्यवहार

4. पापी व्यक्ति से - उपेक्षा युक्त व्यवहार

12. पुरुषार्थ के भेद :- (1) अप्राप्त की प्राप्ति (2) प्राप्त की रक्षा (3) रक्षित की वृद्धि (4) रक्षित का धर्म कार्य में उपयोग।

13. पर्व मनाने के चार उद्देश्य :- (1) परोपकार (2) ऋतु व मौसम की सूचना व स्वागत (3) परिवार, समाज में मनोरंजन व संगठन (4) प्रेरणा के रूप में ऐतिहासिक घटनाओं के पुन: स्मरण करना ।

14. पितृ-पूजा के चार प्रकार:- श्राद्ध - (1) श्रद्धा से अन्न, वस्त्र, दवाई आदि की पूर्ति करना। 2. तर्पण - माता, पिता व वृद्ध जनों को वेदानुकूल आज्ञा का पालन करके उन्हें तृप्त यानि प्रसन्न रखना । 3. सेवा - बीमारी आदि में शारीरिक सेवा करना । 4. सुश्रूषा - वृद्धों की अनिर्मल, कठोर वाणी को भी सहन करके उनको प्रसन्न रखना ।

15. विद्या प्राप्ति के चार उपाय होते हैं :- (1) श्रवण (2) मनन (3) निदिध्यासन (4) साक्षात्कार।

1. श्रवण - आत्मा को मन के साथ और मन को श्रोत्र इन्द्रिय के साथ जोड़कर अध्यापक जो पढ़ाये उसे एकाग्र चित हो ध्यान पूर्वक सुनना तथा सुने हुए विषय को मन में व मन से आत्मा में एकत्र करना श्रवण कहलाता है।

2. मनन - अध्यापक द्वारा पढ़ाये गये जो ज्ञान आत्मा में एकत्र हुए हैं, उन्हे एकान्त में विचार करना या जो-जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध आत्मा में एकत्र हुए हैं उनका स्वस्थ चित्त होकर विचार करना कि कौन शब्द किस अर्थ के सथा और कौन अर्थ किस शब्द के सम्बन्ध रखता है, यह मनन कहलाता है।

3. निदिध्यासन - जो-जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध सुने, विचारे हैं या जो-जो ज्ञान प्राप्त किये हैं, वे ठीक ठीक हैं या नहीं? इस बात की विशेष परीक्षा करके दृढ़ निश्चय करना निदिध्यासन कहलाता है।

4. साक्षात्कार - जो ज्ञान प्राप्त किया है तथा उसकी सच्चाई, प्रामाणिकता की परीक्षा भी करके दृढ़ निश्चय किया है, उसे आचारण में ठाना साक्षात्कार कहलाता है या जिन अर्थों के शब्द और सम्बन्ध सुने, विचारे और निश्चय किये हैं, उन्हें व्यवहार में लाकर अपना और दूसरों का उपकार करना साक्षात्कार कहलाता है।

5 पाँच अंक का महत्व

1. पाँच महायज्ञ :- (1) ब्रह्मयज्ञ (2) देवयज्ञ (3) पितृयज्ञ (4) अतिथियज्ञ (5) बलिवैश्वदेवयज्ञ ।

2. चित्त (मन) की पाँच अवस्थाएँ :- (1) मूढ़ (2) क्षिप्त (3) विक्षिप्त (4) एकाग्र (5) वरुद्ध ।

3. पाँच महाभूत :- (1) पृथ्वी (2) जल (3) अग्नि (4) वायु (5) आकाश ।

4. विद्यार्थी के पाँच लक्षण :- (1) काकचेष्टा (2) बकोध्यानं (3) श्वाननिद्रा (4) अल्पहारी (5) गृहत्यागी ।

5. पाँच पंचगव्य :- (1) दूध (2) दही (3) घी (4) गोमूत्र (5) गोवर ।

6. पाँच पंचामृत :- (1) दूध (2) दही (3) घी (4) शहद (5) तुलसी ।

7. धर्म पालन के पाँच स्वर :- (1) व्यक्तिगत (2) पारिवारिक (3) सामाजिक (4) राष्ट्रीय (5) वैश्विक ।

8. जीवन की पाँच अवस्था :- (1) शिशु (2) बाल्य (3) युवा (4) प्रौढ़ (5) वृद्ध ।

9. पाँच प्रत्यक्ष चेतन देवता :- (1) माता-पिता (2) गुरु-आचार्य (3) विद्वान-संन्यासी (4) पति के लिए पत्नी और पत्नी के लिए पति (5) अतिथि-अभ्यागत ।

10. पाँच जड़ देवता :- (1) पृथ्वी (2) जल (3) अग्नि (4) वायु (5) आकाश ।

11. पाँच प्रकार की बुद्धि :- (1) बुद्धि (2) सद्बुद्धि (3) मेधा (4) प्रज्ञा (5) ऋतम्भरा ।

12. पाँच कोष :- (1) अन्नतमय कोष (2) प्राणमय कोष (3) मनोमय कोष (4) विज्ञानमय कोष (5) आनन्दमय कोष ।

13. पाँच क्लेश :- (1) अविद्या (2) अस्मिता (3) राग (4) द्वेष (5) अभिनिवेश ।

14. संस्कारों की पाँच अवस्थाएँ :- प्रसुप्त (2) तनु (3) विच्छिन्न (4) उदार (5) दग्धबीज ।

15. न्याय दर्शन में किसी बात को सिद्ध करने के लिए पाँच अवयव :- (1) प्रतिज्ञा (2) हेतु (3) उदाहरण (4) उपनय (5) निगमन ।

कृपया पाठकगण इनको खूब ध्यान से पढ़ें और अपने ज्ञान की वृद्धि करें

-खुशहाल चन्द्र आर्य
180 महात्मा गांधी रोड़े (दो तल्ल)
कोलकाता-7
फोन : 22183825

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द की विश्व को सर्वोत्तम एक देन

'वेदों का अध्ययन, आचरण व प्रचार सब मनुष्यों का परम धर्म'

–मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।

आज संसार के लगभग 7 अरब लोग अनेक मत मतान्तरों के अनुयायी हैं। सब मतों की मान्यताओं व सिद्धान्तों की अपनी अपनी पुस्तकें हैं जिन्हें आजकल धर्म ग्रन्थ के नाम से जाना जाता है। यह सभी मान्यतायें एक दूसरे के समान न होकर उनमें परस्पर मतभेद व अन्तर हैं तथा बहुत सी मान्यतायें एक दूसरे की विरोधी हैं। वैदिक सनातन धर्म के अनुयायी पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं परन्तु अवैदिक मतों में से अनेक मत पुनर्जन्म के सिद्धान्त को स्वीकार नहीं करते। वैदिक धर्म शाकाहार का अनुसरण करता है जबकि अनेक मत ऐसे हैं जिनमें साधारण पशुओं सहित गाय तक का मांस खाना वर्जित नहीं है। इन मतों के अनेकानेक लोग गो मांस खाते हैं। भारत ऋषि–मुनियों का देश है। यह दुःख व चिन्ता की बात है कि भारत से गोमांस का निर्यात किया जाता है। इतना ही नहीं गो आदि पशुओं को निर्ममता से मारा जाता है जो कि मनुष्यता की परिभाषा के विपरीत होने से दानव प्रकृति व प्रवृत्ति का द्योतक है। क्या संसार के किसी भी मनुष्य के लिए गो आदि मनुष्यों के हितकारी पशुओं की हत्या करना किसी भी स्थिति में उचित है और क्या किसी भी मनुष्य को गोमांस खाना चाहिये, हमें लगता है कि यह पूर्णतः अनुचित है और किसी भी मनुष्य को किसी भी पशु का मांस कदापि नहीं खाना चाहिये। यह घोर अधर्म है। ऐसा क्यों हो रहा है, इसके पीछे धोर अज्ञानता, जिह्वा का स्वाद व मत–पन्थों की पुस्तकों की अनुचित मान्यतायें हैं। दया सभी मनुष्यों का धर्म हैं। जहां दया नहीं है, वहां धर्म हो ही नहीं सकता। क्या पशुओं के प्रति हिंसा करने वाले दयालु कहे जा सकते हैं?कदापि नहीं कहे जा सकते। जो हिंसा होते देखते हैं परन्तु विरोध नहीं करते वह भी डरपोक व हिंसा करने वालों के सहयोगी ही कहे जा सकते हैं जिसका फल ईश्वर की व्यवस्था से ऐसे व्यक्ति को उनके कर्म व पाप के परिमाण के अनुपात में अवश्य मिलेगा। बुद्धिमान मनुष्यों को यह सोचना चाहिये कि पशुओं को ईश्वर ने क्यों जन्म दिया है?विचार करने पर हमें इस प्रश्न का उत्तर मिलता है कि इन पशुओं के अन्दर जो जीवात्मायें हैं उनके पूर्व जन्मों के कर्म इस प्रकार थे कि ईश्वर ने फल का भोग करने के लिए इन्हें पशु बनाया है। दूसरा कारण यह भी है कि यदि सृष्टि में यह पशु व पक्षि न हो तो मनुष्य का जीवन भी नीरस हो सकता है। तीसरा कारण यह भी लगता है कि ईश्वर इन पशु व पक्षियों के माध्यम से हमें शिक्षा दे रहा है कि हम उन्हें देखकर अच्छे कर्म करें अन्यथा मृत्यु के बाद अगले जन्म में हमें भी उसी प्रकार का जीवन व्यतीत करना पड़ेगा। इन पशुओं व पक्षियों को ईश्वर ने अनेक प्रयोजनों से उत्पन्न किया है जिसका हमारी सीमित बुद्धि होने के कारण हमें ज्ञान नहीं है। अतः हमें अंहिसात्मक जीवन व्यतीत करते हुए उन्हें उनकी पूरी आयु तक जीवन व्यतीत करने में सहयोग करना चाहिये। यदि हम ऐसा करेंगे तो इससे हमें ही लाभ होगा। कल अर्थात् अगले जन्म में यदि हम किसी कारण से पशु या पक्षी बन गये तो इसका हमें ही लाभ होना है। यदि हम गलत परम्परायें डालेंगे तो इससे भविष्य में हमें ही हानि हो सकती है। अतः मनुष्य को मननशील होकर ही अपने सभी कार्य करने चाहिये। जो इस प्रकार से सोच विचार कर अंहिसा का पालन करेगा वह धार्मिक कहलायेगा और जो दया के स्थान पर निर्दयता का परिचय देता है वह वैदिक सनातन मत के आधार पर अधार्मिक, अधर्मी, दानव, अनार्य या पापी ही कहे जा सकते हैं। ऐसा ही अन्य–अन्य कर्तव्यों व कर्मों के सम्बन्ध में जाना जा सकता है।

संसार में इतने अधिक मत–मतान्तर क्यों हैं?इसका अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि संसार के सभी मताचार्यों का वेद ज्ञान से रहित होना, ज्ञान की कमी, मताचार्यों के भ्रम व अन्धविश्वास तथा उनकी लोकैषणायें ही इन व ऐसी समस्याओं का कारण हैं। किसी भी मत या धर्म के व्यक्ति को यदि वेदों का यथार्थ ज्ञान हो जाता है तो वह कदापि किसी प्राणी या पशु की हत्या नहीं कर सकता। वेदों का ज्ञान होने पर वह पशुओं को भी अपनी आत्मा के समान और अपनी आत्मा को पशुओं के समान जानने व देखने लगता है व उसका व्यवहार सबके प्रति प्रेम, स्नेह, त्याग व सेवा का होता है। आइये, यह जानने का प्रयास करते हैं कि वेद क्या हैं और वेद अन्य मतों व धर्मों के ग्रन्थों से भिन्न किस प्रकार से हैं?वेद ज्ञान की चार पुस्तकों को, जिन्हें ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद के नाम से जाना जाता है, कहते हैं। इन पुस्तकों में संस्कृत में लिखे हुए मन्त्र हैं। यह मन्त्र इस संसार को बनाने व चलाने वाले ईश्वर ने सृष्टि उत्पन्न करने के बाद अमैथुनी सृष्टि में उत्पन्न मनुष्यों में चार श्रेष्ठ जीवात्माओं जिनके नाम क्रमशः अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा हैं, दिये थे। कैसे दिये थे?इस प्रश्न का उत्तर है कि संसार को बनाने वाली सत्ता ईश्वर चेतन तत्व, निराकार, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सूक्ष्मातिसूक्ष्म आदि अनन्त गुणों वाली है। वह सर्वव्यापक व सर्वातिसूक्ष्म होने से सभी मनुष्यों के शरीरों के भीतर तो विद्यमान है ही, इसके साथ वह सभी प्राणियों की आत्माओं के भीतर भी एकरस होकर विद्यमान व स्थित है। एक प्रसिद्ध नियम है कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है। विचार व गहन चिन्तन करने पर यह नियम सत्य पाया गया है। कोई भी विचार व चिन्तन कर इसकी पुष्टि कर सकता है। इस नियम का प्रकारान्तर से यह भी अर्थ है संसार में विद्यमान सभी विद्यायें ईश्वर में विद्यमान हैं और उसी से संसार में फैली हैं। अर्थात् ईश्वर ही सभी विद्याओं का आदि स्रोत है। प्रश्न यह है कि ईश्वर में जब सब विद्यायें हैं तो वह अल्पज्ञ जीवात्मा अर्थात् हम व सभी प्राणी जिन्हें ज्ञान व विद्याओं की आवश्यकता है, ज्ञान देगा या नहीं। हम माता–पिता व आचार्य का उदाहरण लेते हैं। माता–पिता और आचार्य कोई अधिक और कोई कम ज्ञानयुक्त होते हैं। वह अपनी सन्तानों वा शिष्यों को उनके लाभ व सुख के लिए निःस्वार्थ भाव से अपनी पूरी समार्थ्य से अधिक से अधिक ज्ञान प्रदान करते हैं। यही उदाहरण ईश्वर पर भी अक्षरक्षः घटित होता है। ईश्वर भी अपनी शाश्वत प्रजा जीवात्माओं रूपी अपने अमृत पुत्र व पुत्रियों अर्थात् सभी मनुष्यों को माता–पिता व आचार्यों के समान सृष्टि के आरम्भ में वेदों का भाषा व अर्थ सहित ज्ञान पूर्व उल्लिखित चार ऋषियों की आत्माओं में सर्वान्तर्यामी स्वरूप से देता है और उनको प्रेरणा कर अन्य सभी स्त्री पुरूषों को कराता है। वहीं से अध्ययन व अध्यापन की परम्परा का आरम्भ हुआ जो वर्तमान में भी विद्यमान है।

वेदों का ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में पहली पीढ़ी के मनुष्यों को मिला था। प्राणियों की उत्पत्ति सहित संसार को बने हुए इस समय 1,96,08,53,115 वर्ष हो चुके हैं। अब से लगभग 5,225 वर्ष पूर्व महाभारत का विश्व प्रसिद्ध युद्ध हुआ था। इस युद्ध में जान व माल की भारी क्षति हुई थी। इस कारण शिक्षा व धर्म प्रचार तथा संगतिकरण आदि के कार्य भी बाधित हुए थे। इस कारण समय के साथ–साथ अज्ञान व अन्धकार बढ़ता रहा। मध्यकाल का समय घोर अज्ञान व अन्धकार का काल था। इस बीच सत्य वेदार्थ प्रायः कहीं भी विद्यमान न रहा। लोगों ने कपोल कल्पित मान्यतायें स्थापित कर उन्हें वेदों के नाम से समाज में प्रचलित कर दिया। अहिंसा का पालन करने वाले यज्ञों में पशुओं का वध किया जाने लगा। स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन के अधिकार से वंचित कर दिया गया। वेदों में स्पष्ट लिखा है कि वेदाध्ययन का अधिकार सभी मनुष्यों को समान रूप से है। वेद की इस व्यवस्था को भुला दिया गया। ऐसे अन्धकार के काल में भारत में और संसार के अनेक देशों में भी अन्धकार के फैले होने के कारण उस काल में मत–मतान्तर उत्पन्न हुए जिनमें कुछ सत्य था तो बहुत कुछ असत्य भी था। यही सत्यासत्य मिश्रित मत वर्तमान में भी विद्यमान हैं। भारत में भी इसी प्रकार के अनेक मत प्रचलित हैं जिनका आधार पुराण जैसे ग्रन्थ हैं। इन विषयों पर पर्याप्त साहित्य विद्यमान है जिसका अध्ययन कर सत्य को जाना जा सकता है। वर्तमान में नये–नये मत भी उत्पन्न हो रहे हैं जिसका कारण

thearyasamaj.org

लोकैषणा, अज्ञान, लोभ व स्वार्थ आदि हैं, अन्य कोई कारण दृष्टिगोचर नहीं होता है। यह बात कुछ या बहुत ही विवेकशील लोग जानते हैं। धर्माधर्म विषयक सत् साहित्य के अध्ययन से इतर सामान्य व्यक्ति इन मतों की यथार्थ स्थिति को नहीं जान सकते। यदि सभी मतों के सिद्धान्तों की परीक्षा की जाये तो यह ज्ञात होता कि इन्हें न तो पूर्णतया ईश्वर के स्वरूप, उसके कार्य, भावना व व्यवहारों का ही ज्ञान है और न ही जीवात्मा का। इन्हें तो प्रकृति का भी ठीक प्रकार से ज्ञान नहीं है जैसा ज्ञान हमारे वेद व्याख्या के ग्रन्थों, दर्शनों व उपनिषदों आदि में विद्यमान है। इस संसार को उत्पन्न करने वाले ईश्वर का स्वरूप बताते हुए महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है। ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। वही एकमात्र ईश्वर उपासना के योग्य है और सभी मनुष्यों को उसी की उपासना करनी चाहिये। अन्य विद्वान पुरूष या महापुरूष संगति करने योग्य तो हो सकते हैं परन्तु नित्य उपासना करने योग्य तो एकमात्र और केवल एक सर्वव्यापक व निराकार ईश्वर ही है जिसके गुणों का ध्यान करना और उसके गुणों के अनुसार अपने जीवन को बनाना अथवा उसके गुणों को जीवन में धारण करना ही मनुष्य का कर्तव्य व धर्म है। यह ज्ञान वेदाध्ययन से प्राप्त होता है।

वेदों का सर्वाधिक महत्व का एक कारण हमारी दृष्टि में वेदों से प्राप्त ईश्वर, जीव व प्रकृति सहित जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य, धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष एवं इनकी प्राप्ति के साधनों आदि का यथार्थ ज्ञान व जानकारी है जो कि अन्य मतों के ग्रन्थों में उपलब्ध नहीं होती है। हमारे ऋषियों ने वेदों के अंग व उपांग विषयक ग्रन्थों की रचना करके वेदाध्ययन को सरल बनाने का प्रयास किया है। इन अंगों व उपांगों, जिनका अध्ययन व ज्ञान वेदार्थ बोध में सहायक व अपरिहार्य है, के साथ वेदों का अध्ययन करने से सभी मनुष्यों को अपने जीवन के लक्ष्य व उसके साधनों का ज्ञान हो जाता है। इस अध्ययन से ज्ञात होता कि धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की प्राप्ति के लिए यह हमारा मनुष्य जीवन हमें ईश्वर से मिला है। महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर वेद मन्त्रों से युक्त ईश्वर का ध्यान व उपासना करने के लिए "सन्ध्या" नाम से एक पुस्तक की रचना की है। इसके समर्पण मन्त्र में वह लिखते हैं कि "हे ईश्वर दयानिधे! भवत्कष्पयानेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थकाममोक्षाणां सद्यः सिद्धिर्भवेन्नः।" इस समर्पण मन्त्र में मनुष्य जीवन के उद्देश्य व लक्ष्य को धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष बताया गया है और कहा गया है कि अनेक प्रकार से जप, उपासना आदि कर्मों को जो हम करते हैं, उसके परिणामस्वरूप ईश्वर अपने भक्त या उपासक को इन चारों पुरूषार्थ रूपी दिव्य धन व फल प्रदान करें। धर्म का अर्थ यहां यह है कि उसके जीवन में अधर्म पूर्णतः समाप्त हो जाये। वह कभी कहीं कोई अधर्म का काम न करें। वह जो भी कार्य करे वह सब के सब वेद सम्मत व धर्म कार्य हों। यह कार्य सन्ध्या व अग्निहोत्र आदि पंचमहायज्ञों सहित दूसरो की सेवा, परोपकार, हित चिन्तन, सन्मार्ग दर्शन, सहायता, सत्परामर्श आदि व ऐसे ही कार्य होने चाहिएं। हमें लगता है कि वेदों की यह बातें व परामर्श वेदों की संसार के मानवमात्र के लिए ईश्वर की ओर से सबसे बड़ी देनों में से एक देन है। इसलिए हम सभी मत–मतान्तरों को छोड़कर केवल वेदों की शरण में आकर चिर–शान्ति वा मोक्ष की प्राप्ति कर सकते हैं और इसके साथ इस जीवन में सुखी व सन्तुष्ट रह सकते हैं। 'नान्यः पन्था विद्यते अयनाय।' इस वेद–सूक्ति के अतिरिक्त जीवन को श्रेष्ठ बनाने का अन्य कोई मार्ग है ही नहीं। हमारी दृष्टि में यही वेदों का वेदत्व है और यही वेदों के ईश्वरत्व होने का प्रमाण भी है। अतः हमें अपने सभी प्रकार के अन्धविश्वासों व मिथ्या विश्वासों को तिलांजलि देकर वेद की शरण में आकर अपने जीवन को सफल करना चाहिये।

वेदों का इतना महत्व क्यों है?इसका एक कारण यह भी है कि वेदों ने ही यह बताया है कि सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उनका आदि मूल परमेश्वर है। यह बात विज्ञान को सिद्ध नहीं करनी पड़ी। यदि करनी पड़ती तो शायद वह इसे सिद्ध नहीं कर सकते थे? इस कारण कि आज भी हमारे प्रख्यात वैज्ञानिक ईश्वर के अस्तित्व एवं स्वरूप तथा उसकी कार्य प्रणाली के बारे में सर्वथा या अधिकांशतः विमुख व विरूद्ध ही हैं। यहां हम महर्षि दयानन्द सरस्वती लिखित चार वेदों के आर्ष कोटि के भाष्य की भूमिका की चर्चा करना भी समीचीन समझते हैं। वेदों के प्रमाणों से सुसज्जित इस विख्यात ग्रन्थ में वेदों में वर्णित कुछ विषयों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अध्यायों में वर्णित विषयों से ही पुस्तक का महत्व जाना जा सकता है। इस पुस्तक में वर्णित क्रमशः अध्याय हैं – ईश्वर प्रार्थना विषय, वेदोत्पत्ति विषय, वेदों के नित्यत्व पर विचार, वेदों में सम्मिलित विषयों पर विचार यथा विज्ञान, कर्म, यज्ञ आदि, वेद संज्ञा विचार, ब्रह्म विद्या, वेदोक्त धर्म, सृष्टि विद्या, पृथिव्यादि लोकों का भ्रमण, आकर्षण–अनुकर्षण, प्रकाश्य–प्रकाशक लोक आदि, गणित विद्या, स्तुति–प्रार्थना–याचना व समर्पण, उपासना विधान, मुक्ति, समुद्र–यान व वायुयान अदि विद्या, तार विद्या, वैद्यक वा चिकित्सा शास्त्र, पुनर्जन्म, विवाह, नियोग, राजा व प्रजा के धर्म्म वा कर्तव्य, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ एवं सन्यास आश्रम विषय, पंच–महायज्ञ विषय, ग्रन्थ–प्रमाणाप्रमाण विषय, अधिकार अनाधिकार विषय, पठनपाठन आदि अनेक विषयों का वर्णन है। इसके लिए इस ग्रन्थ को देख व पढ़कर ही इसके महत्व से परिचित हुआ जा सकता है। हमारे अनुमान में इस ग्रन्थ व सत्यार्थ प्रकाश के समान ग्रन्थ विश्व के साहित्य में नहीं है।

इसी क्रम में हम महर्षि दयानन्द के एक ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का वर्णन भी करना चाहते हैं। इस ग्रन्थ का आधार भी मुख्यतः वेद ही है। इस ग्रन्थ में महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर अनेकानेक विषयों को स्पष्ट किया है। यह सर्वथा मौलिक ग्रन्थ है जिसमें लेखक ने तीन हजार से अधिक प्रमाणिक ग्रन्थों का अध्ययन कर अपनी मान्यताओं के समर्थन में सहस्राधिक ग्रन्थों से प्रमाण प्रस्तुत किए हैं। इन प्रमाणों व ग्रन्थों से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि प्राचीन काल में हमारे पूर्वजों ने सत्य के अनुसंधान में कितना पुरूषार्थ किया था। संसार का कोई भी देश और आज का कोई भी मत–सम्प्रदाय सत्य के अनुसंधान की दर्षष्टि से वैदिक साहित्य से स्पर्धा नहीं कर सकता। अन्य मतों व पन्थों में धर्म व सत्य की व्याख्या में जिन ग्रन्थों का प्रणयन उनके विद्वानों ने किया है वह वेदों की तुलना में अत्यन्त न्यून व तुच्छ है। हम यह भी कहना चाहते हैं कि सत्यार्थ प्रकाश में हमें महर्षि दयानन्द की वेदों से उत्पन्न मनीषा व प्रज्ञा एवं तीव्र ऊहापोह वाली बुद्धि के दर्शन होते हैं जिससे अनेक स्थलों को पढ़कर रोमांच हो आता है और महर्षि दयानन्द के विषयों के आंकलन व सत्य के उद्घाटन को देख कर उन पर ईश्वर की कृपा का अनुभव व अनुमान भी होता है। उन्होंने वह कार्य किया है और वह ज्ञान दिया है जो महाभारत काल के बाद कोई धर्माचार्य व महापुरूष नहीं दे सका। इसी कारण महर्षि दयानन्द विश्वगुरू व जगदगुरू शब्दों को अपने व्यक्तित्व में सही अर्थों में चरितार्थ करते हुए सिद्ध होते हैं। वह दिग्विजयी धर्मवेत्ता सत्य व विज्ञान के संवाहक, न भूतो न भविष्यति उपमा से सुशोभित महापुरूष भी थे।

हमने महर्षि दयानन्द सरस्वती प्रदत्त वेद ज्ञान के आलोक में इस लेख में वेदों का अध्ययन व अध्यापन सब मनुष्यों का परम धर्म है, इस विषय में कुछ विचार किया है। हम आशा करते हैं कि वेदों का अध्ययन करके इन विचारों व मान्यताओं के अनुसार जीवन को बनाने से ही मानव जाति का कल्याण हो सकता है। पाठकगण अपनी प्रतिक्रियाओं से कृतार्थ करें। इन शब्दों के साथ हम महर्षि दयानन्द के 23 अक्तूबर, 2014 को 132 वें निर्वाणोत्सव पर उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि भेंट करते हैं और 'महर्षि तेरे अहसां को न भूलेगा जहां वर्षो, तेरी रहमत के गीतों को ये गायेगी जुबां बरसों।' इन पंक्तियों से लेख को विराम देते हैं।

पताः 196 चुक्खूवाला ब्लाक 2
देहरादून–248001
फोनः 09412985121 /08476942528

thearyasamaj.org

स्व. उमाकान्त उपाध्याय एक अविस्मरणीय व्यक्तित्व।

स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय जी का जन्म प्रसिद्ध उपाध्याय परिवार ग्रा. झौवारा जि. सुलतानपुर (उ.प्र.) में हुआ था। पण्डित उमाकान्त उपाध्याय जी अपने शैशव से ही आर्य समाजिक विचारधारा की छत्र छाया में पले बढ़े। आपने अर्थशास्त्र की पढ़ाई की एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय में आप अर्थशास्त्र के प्राध्यापक बनें। आप आर्यसमाज कलकता के आधार स्तम्भ थे। आप सार्वदेशिक सभा के कई विभागों के सम्मानित सदस्य रहे। अन्तराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वेद शास्त्रों के प्रकाण्ड पण्डित, व्याख्याता, महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों और आर्यसमाज के मन्तव्यों के एक निष्ठ अथक प्रचारक, आर्य समाज एवं संस्कृति के सजग प्रहरी एवं उद्घोषक स्व. उमाकान्त उपाध्याय जी ने अनवरत 87 वर्ष की आयु तक अपना स्वर्णित जीवन आर्य समाज के लिए ही समर्पित किया। आपने अपने जीवन काल में शताधिक वेद पारायण यज्ञों के ब्रह्मापद पर आसीन होकर विभिन्न आर्य सम्मेलनों एवं महासम्मेलनों के सुसंचालन के रूप में महान् यश अर्जित किया। पूज्य पण्डित जी जीवन के पूर्ण विराम के क्षणों तक यज्ञमय जीवन एवं साधक का जीवन जीते रहे ।

स्व. शिवाकान्त जी

स्व. उपाध्याय जी का परिवार आर्य समाज के विद्वानों का गढ़ रहा है। उपाध्याय जी के बड़े भाई स्व. रमाकान्त उपाध्याय जी ने संस्कृत में दयानन्द चरित महाकाव्य की रचना की है इतने मात्र से अनुमान लगाया जा सकता है कि उनकी विद्वत्ता एवं ऋषि भक्ति कैसी रही होगी। आपके छोटे भाई शिवाकान्त उपाध्याय जी साइन्स के विद्यार्थी रहे एवं आर्य समाज के सिद्धान्तों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से रखने वाले मर्मज्ञ विद्वान थे। आर्य समाज राजेन्द्र नगर में आप धर्माचार्य रहते हुए जो सेवा की है वह अनुकरणीय, वन्दनीय एवं नमनीय है। ऐसे ही आपके भाई स्व. श्रीकान्त जी भी आर्य समाज में तेजस्वी व्यक्तित्व के धनी थे। उपाध्याय परिवार के विद्वत परम्परा को नमन करते हुए यही प्रार्थना है कि आर्य जगत् में ऐसे ही ऋषि दयानन्द के भक्त जन्म लेते रहें।

स्व. उमाकान्त जी

–अशोक सहगल

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय की स्मृति में वेद संगोष्ठी सम्पन्न

वेद वेदांग विद्यापीठ गुरुकुल धनपतगंज सुलतानपुर का नवाँ वार्षिकोत्सव 2 से 5 नवम्बर तक हर्षोल्लास के सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर ऋग्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ गुरुकुल के आचार्य डॉ. शिवदत्त पाण्डेय जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न हुआ। प्रतिदिन प्रातः सायं यज्ञ के साथ-साथ विद्वानों के भजन प्रवचन एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। इस वर्ष गुरुकुल में स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय जी की स्मृति में चण्डीगढ संस्कृत अकादमी के सहयोग से राष्ट्रीय वेद संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी का मुख्य विषय था-**वेदार्थ और वेद भाष्यकार** इस अवसर पर काशी हिन्दू विश्व विद्यालय, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय के लगभग 25 शोधार्थियों एवं प्राध्यापकों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। आचार्य उमाकान्त उपाध्याय की साहित्य साधना को देखते हुए यह प्रथम वैदिक संगोष्ठी आयोजित की गई थी। गुरुकुल के संचालक आचार्य डॉ. शिवदत्त पाण्डेय जी ने स्व. उपाध्याय जी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी कर्मशीलता, सात्विकता, साधना, सेवा एवं पवित्रता का उल्लेख किया एवं स्व. उपाध्याय जी का स्मृति में यथा मति-यथाशक्ति प्रतिवर्ष वेद संगोष्ठी गुरुकुल में आयोजित करने का संकल्प भी लिया।

THOUTS TO PONDER OVER

1) There is a court of justice and that is the court of conscience it supersedes all other courts. (Mahatma Gandhi)
2) Money can build a house but it takes love to make a bome
3) Love is at its peak, when there is no demand or cravings.
4) A happy marriage is the union of two good forgivers.
5) To get the most of each day, establish your clear priorities before you start work.
6) Be safe in the fortress of your own peace.
7) Don't wait for extra-ordinary opportunities-sieze common occasions and make then great.
8) To err is human-There is no one without faults, not even men of God. They are men of God-not be cause they know their faults, but because they strive against them and are ready to correct themselves. (Mahatma Gandhi)
9) (i) Respect the old when you are young. (ii) Help the weak when you are strong. (iii) Confess the fault when you are wrong.
10) Brighten your day with the sunshine of thanks.

thearyasamaj.org

शीत ऋतु का सदुप्रयोग एवं स्वास्थ्य

शीत ऋतु के अन्तर्गत हेमन्त एवं शिशिर ऋतु का समावेश होता है। यह काल नवम्बर, दिसम्बर, जनवरी एवं फरवरी माह का होता है। इस ऋतु में सूर्य दक्षिण मुखी एवं चन्द्रमा के पूर्वबर्ति होने के कारण शारीरिक बल भी प्रबल होता है। शरीर की जठराग्नि भी तीव्र होती है। इसी ऋतु में घृत, तैल, स्निग्ध, गुरुआहार दूध एवं दूध से बने आहार, ईख एवं ईख से बने पदार्थ का भरपूर सेवन करना चाहिए। मधुर (मीठा) अम्ल (खट्ठा) एवं लवण (नमकीन) स्वाद वाले आहार का सेवन प्रचुर मात्रा में करना चाहिए। शीतल हवाओं से बचने के लिए तैल का अभ्यास सम्पूर्ण शरीर एवं सिर पर करना चाहिए। उत्सादन, स्वेदन, एवं धूप का सेवन करना चाहिए। शीत ऋतु में लधु, रुक्ष एवं शीतल आहार का सेवन नहीं करना चाहिए।

शीत ऋतु में ही नवदम्पतियों को वृष्य एवं वाजीकर औषधियों का सेवन कर यथेष्ट एवं श्रेष्ठ संतान की कामना करनी चाहिए। वृष्य एवं वाजीकर औषधियाँ पुरुषों के शुक्र एवं स्त्रियों के अण्डाणु को अधिक शक्तिशाली एवं क्रियाशील बनाता है जिससे होने वाली संताने व्याधि रहित एवं स्वस्थ होती हैं जैसे अच्छी फसल के लिए किसान उर्वरक का प्रयोग करते हैं।

वरिष्ठ नागरिकों को शरीर गरम रखन के लिए ऊन से बने वस्त्र या गरम कपड़े का प्रयोग करना चाहिए क्योंकि इनमें हृदयाघात एवं मस्तिष्काघात होने का खतरा बना रहता है।

– ज्यादा जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

–डॉ. दीपक, 011–45118411
9953024116

– संवेदना संदेश –

यह जान कर अत्यन्त दुःख हुआ कि प्रो. उमाकान्त उपाध्याय जी का दिनांक 2.11.14 को 87 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। किसी तेजस्वी व्यक्ति की मृत्यु पर लोगों को जैसा दुख होता है, उसका अनुमान भी लगाना कठिन है..., क्योंकि ऐसे व्यक्ति का निधन, निश्चय ही कष्टदायक होता है, जिससे किसी राष्ट्र या समाज की विशेषतः हित साधन होने की आशा हो!

प्रो. उमाकान्त उपाध्याय जी उच्चकोटि के विद्वान एवं ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे। संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी के वे प्रखर वक्ता एवं वेद भक्त थे। उनकी साहित्य साधना, जीवन के अन्तिम समय तक चलती रही। आर्य समाज, विधान सरणि, कलकत्ता की पहचान आपके माध्यम से थी। आपके बड़े भाई स्व. रमाकान्त उपाध्याय जी आर्य समाज के गौरव थे। आपके छोटे भाई स्व. शिवाकान्त उपाध्याय जी कर्मनिष्ठ तपस्वी थे। आर्य समाज राजेन्द्रनगर से स्व. शिवाकान्त उपाध्याय की का अनन्य सम्बन्ध रहा, एतदर्थ, आपका भी समय–समय पर राजेन्द्र नगर आना होता था।

स्व. उमाकान्त जी के लिए उन्ही के द्वारा उद्धृत एक श्लोक पूर्णतया चरितार्थ होता है...

सुशीलो मातृपुण्येन पितृपुण्येन बुद्धिमान्।
यशस्वी वंशपुण्येन आत्मपुण्येन भाग्यवान् ।।

प्रो. उपाध्याय जी के निधन से, समाज की जो हानि हुई... खासतौर से आर्य समाज की हानि..., उसकी तो क्षतिपूर्ति नही हो सकती। हमारे विचार से किसी भी देश के किसी महापुरुष की मृत्यु को मानवजाति पर आई विपत्ति ही माननी चाहिए।

प्रभु की न्याय–व्यवस्था के अनुसार, दिवंगत पुण्यात्मा को सद्गति मिले। परमात्मा शोक सन्तप्त परिवार को, इस दारुण दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करे...। दिवंगत आत्मा को सश्रद्ध श्रद्धांजलि ।

–आर्यसमाज राजेन्द्र नगर के सभी सभासद एवं अधिकारी

IF GOD SHOULD GO ON STRIKE

It is just a good thing
God above has never gone
On strike because :
He wasn't treated fair or for things he did not like.
If he sat down once and said, "That's it, I am through,
I' ve had enough of those on earth, so this is what I' ll do :
I' ll give my order to the sun –
" Cut off your heat and light supply" and to the Moon-
"Give no more light and run ocens dry"
Then, just to make it really tough-and put the pressure on-
"Cut out the air and oxygen till every breath is gone".
Men say they want a better deal, and on strike they go :
But what deal we' have given God- to whom everything we owe.
We don't care whom we hurt or harm-
To gain the things we like But what a mess med all be in :
If God should go on strike !!

- Sudarshan Rai

thearyasamaj.org

मानव जीवन की सफलता का रहस्य

– आचार्य भगवानदेव वेदालंकार

1. मनुष्य सबसे श्रेष्ठ प्राणी–

संसार में अनेक बहुमूल्य पदार्थ हैं। उनमें मानव–जीवन ही सर्व श्रेष्ठ है। मानव परमात्मा की सर्वोत्तम रचना है। अनेक जन्मों के पश्चात् दुर्लभ मनुष्य योनि प्राप्त होती है। तुलसीदास जी ने इसकी श्रेष्ठता व महिमा इन शब्दों में कही है –

"बड़े भाग मानुष तन पावा।
सुर दुर्लभ सदग्रन्थहिं गावा ।।"

भाग्यशाली को यह जीवन प्राप्त होता है। आत्मज्ञान एवं आत्मदर्शन इसी में सम्भव है। वही जीवन परमार्थ, धर्मार्थ व पुण्य–कर्म करने का आधार है। मनुष्य–शरीर में ही भक्ति, पूजा, प्रार्थना, साधना, सेवा, शुभ–कार्य आदि हो सकते हैं। इसी जन्म की सफलता के द्वारा जीवन के चरम लक्ष्म मोक्ष तक पहुँचा जा सकता है। इस जीवन की प्राप्ति एक स्वर्णिम अवसर है। ऐसा सुनहरा मौका बार–बार नहीं मिलता। किसी कवि का यह कहना उचित ही है–

"रात गँवाई सोयकर दिवस गवायो खाय।
हीरा जन्म अमोल था, कौड़ी बदले जाए।।

आम आदमी दुर्लभ मानव–जीवन को खाने–पीने, सोने और विषय–भोगों में ही गुजार देता है। जीवन को सीधा करते–करते ही जीवन खत्म हो जाता है। जीवन की सफलता की तैयारी करते करते ही जीवन निकल जाता है। आज के इन्सान ने जीवन का अर्थ समझा ही नहीं, जीवन को सफल बनाया ही नहीं। फिर भी हम देखते हैं कि जीवन के दो मुख्य पहलू हैं – एक सफल जीवन और दूसरा निष्फलता का जीवन। कुछ व्यक्ति अपने जीवन में सफल हो जाते हैं लेकिन कुछ व्यक्ति अपने मानवोचित कमजोरी के कारण दूसरे की सफलताओं से दुःखी होते हैं। यों तो सुख और दुःख मानव जीवन के साथ–साथ जुड़े रहते हैं।

2. सफलता शान्ति का कारण –

जहाँ सफलता है, आत्म–सन्तोष है, शान्ति है, खुशी है, प्रसन्नता है, सुख–समृद्धि है। वहाँ सुख है, आनन्द है। जहाँ निष्फलता है, कमजोरी है, ईर्या है, द्वेष है, असन्तोष है, अभाव है, अन्याय है, अत्याचार है वहीं परेशानी है, दुःख है, अशान्ति है। मानव में कमजोरी है कि वह जीवन की सफलता के लिए उतना श्रम नहीं करता, जितना उसे करना चाहिये। वह जहाँ दूसरे व्यक्ति को सफलता की ओर बढ़ता हुआ देखता है, वहीं वह अपनी अन्दर की छिपी हुई कमजोरी ईर्या और द्वेष के कारण दुःखी होने लगता है। वह अपनी मन की संकल्प–शक्ति को भुला देता है। जल्दी निराशा के वशी भूत हो जाता है। मनुष्य को आशावादी होना चाहिये। निराशावादी नहीं। वेद में कहा है–"तन्मे मनः शिव संकल्पम् अस्तुः " अर्थात् हमारा यह मन उत्तम और श्रेष्ठ विचारों वाला हो। कोई हमसे द्वेष न करे और हम भी किसी से द्वेष न करें।

3. सफलता के अनुभूत उपाय –

इसमें कोई सन्देह नहीं है कि मानव–जीवन विशेष जीवन–यापन का एक उत्तम पहलू है। सभी मनुष्य चाहे वह स्त्री हो, या पुरुष हो, युवा अथवा वृद्ध हो कहीं न कहीं रहकर अपनी जीवन–यात्रा को चलाने के लिए कुछ न कुछ करते हैं। किन्तु जीवन को सुखपूर्वक जीने की कला को शायद बहुत कम लोग जानते होंगे। हमारी इस वार्ता के माध्यम से जीवन में निराशा की ओर, असफलता से सफलता की ओर अग्रसर होने, किसी भी कार्य को शीघ्र और कुशलता से करने के सरल तरीके एवं अनुभूत उपायों पर प्रकाश डाला जा रहा है। जैसे – 1. आज का कार्य कल पर न टालना – प्रतिदिन का कार्य प्रतिदिन निपटा देने से ही जीवन में सफलता मिल सकती है। जिसने भी आज का काम कल पर टाला, समझो वह एक महत्त्वपूर्ण समय को खो चुका। हम किसी चीज का मूल्यांकन तब करते हैं जब वह हमारे हाथों से निकल जाती है। माता पिता की कीमत तब पता चलती है जब वे हमसे विदा हो जाते हैं। ऐसे ही जब जीवन खत्म हो जाता है तब हमें जीवन की कीमत पता चलती है। और जीने का ढंग आता है। इसीलिए कहा है कि **"काल करे सो आज कर, आज करे सो अब। पल में परलै होयगी, बहुरि करेगा कब।"**

अर्थात् कल–कल की बात मत करो। मनुष्य के कल को कौन जानता है? कवि के शब्दों में –**"आगाह अपनी मौत से, कोई बशर नहीं। सामान सौ बरस का, पल की खबर नहीं।।"**

अर्थात् जीवन की सफलता के लिए समय का पालन करो। जीवन का एक–एक क्षण अमूल्य है। दुनिया में सबसे कीमती चीच समय है जो समय को पहचानते और उसकी कीमत करते हैं वे जीवन में आगे बढ़ जाते हैं।

सफल व्यक्तियों के गुणों को ग्रहण करें– सफलता सिर्फ एक संयोग नहीं है। एक व्यक्ति एक के बाद एक सफलता हासिल करता चला जाता है जबकि दूसरे लोग सिर्फ तैयारियों में ही लगे रहते हैं। सफलता और असफलता के विषय पर बहुत खोज हुई है। जब हम सफल व्यक्तियों की जीवनियों पर नजर डालते हैं तो पता चलता है कि सभी में निसन्देह मिलते–जुलते कुछ खास गुण हैं। सफलता हमेशा अपने निशान छोड़ जाती है और अगर हम इन निशानों को पहचान लें और सफल व्यक्तियों के गुणों को अपने जीवन में अपना लें, तो हम भी सफल हो जायेंगे फिर हमें दूसरों की सफलता से दुःखी होने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। असफलता सही मायनों में कुछ गलतियों को लगातार दोहराने का नतीजा है।

अपनी कमजोरियों को दूर करें– मनुष्य दूसरों की सफलता से दुःखी क्यों होता है? व्यक्ति में कुछ कमजोरियां बैठ जाती हैं जैसे– मिथ्या अहंकार, स्वाभिमान की कमी, सफलता– असफलता का डर, विचार पूर्वक भावी योजन का न होना, अपने मुख्य लक्ष्यों अथवा उद्देश्यों का न होना, समय के अनुसार जिन्दगी में बदलाव न लाना, समय पर कार्य न करना अथवा टालमटोल, निकम्मापन, उचित श्रम न करना, पारिवारिक जिम्मेदारियों का पालन न करना, आर्थिक असुरक्षा, धन की कमी, दिशाहीनता, रुपये–पैसों के लालच की वजह से दूर की न सोचना, सारा बोझ खुद उठाना, क्षमता से

thearyasamaj.org

ज्यादा अपने आपको बान्धना, वचन-बद्धता का न होना, उचित अनुभव न होना प्रशिक्षण की कमी का होना, दृढ़ता की कमी, आत्मविश्वास का खोना इत्यादि कमजोरियों के कारण मनुष्य दूसरों की सफलता से दुःखी होता देखा गया है।

4- धन का भी जीवन में महत्त्व समझें

यद्यपि जीवन को सफल बनाने के लिए अनेक सहायक तत्त्वों की आवश्यकता है जैसे -

शरीर को धारण करने वाला और पालन-पोषण करने वाला महत्त्व पूर्ण तत्त्व धन है। धन के अभाव में जीवन की गाड़ी चल नहीं सकती। धनोपार्जन मनुष्य का धर्म है। श्री भर्तृहरि ने तो यहाँ तक घोषणा कर दी कि **"धनवान् ही कुलीन है, धन सम्पन्न व्यक्ति ही पण्डित है, विद्वान् है, गुणज्ञ और वक्ता है एवं रूपवान् है।"** महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने तो यहाँ तक कह दिया- **"पुरुषोऽधनम् वधः"** धन का न होना मनुष्य की मृत्यु है। धन जीवन-विकास का साधन है, साध्य नहीं। धन से श्रेष्ठ और महत्त्वपूर्ण जो जीवन को धारण करता है वह है- स्वास्थ्य अर्थात् निरोगिता।

5- स्वास्थ्य को स्थिर बनाने के लिए व्यायाम अवश्य करें-

जीवन में स्वास्थ्य के महत्त्व को कौन नहीं अनुभव करता। छोटे से छोटा, बड़े से बड़ा, क्या अमीर क्या गरीब, क्या स्वामी क्या सेवक, क्या विद्वान् क्या मूर्ख सभी को रोग का अहसास होने पर स्वास्थ्य के महत्त्व की अनुभूति होती है किन्तु अल्पज्ञ मनुष्य धन, ऐश्वर्य, विद्वत्ता एवं बल आदि के मिथ्या अभिमान के नशे में स्वास्थ्य की अवहेलना करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ता। आयुर्वेद के महान् आचार्य महर्षि चरक का कथन है- **"धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष"** इन सबका मूल उत्तम स्वास्थ्य है।"

अतएव जहाँ जीवन में धन का बड़ा महत्त्व है वहाँ 'स्वास्थ्य' के अभाव में धन का महत्त्व भी नगण्य सा प्रतीत होने लगता है।

6. "जीवन-विकास के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण एक और तत्त्व है जिसे 'आचरण या चरित्र" कहा जाता है। इसका सीधा सम्बन्ध 'मन' और 'आत्मा से है। प्रायः देखा गया है कि चरित्र के अभाव में बड़े-बड़े 'धनधारी' समय आने पर विनाश के गर्त में गिर कर नरक भोगने लगते हैं। जीवन में सफलता पाप्त करने के लिए उत्तम आचरण होना आवश्यक है। उत्तम आचरण से मानव दुःख दायी पाप से बचा रहता है और वह जीवन को सफलता की ओर अग्रसर करता है।

7. श्रेष्ठता लाने का प्रयत्न अवश्य करें- सफलता की राह में कामयाबी हासिल करने के लिए हमें 'श्रेष्ठता' हासिल करने की कोशिश करनी चाहिए। श्रेष्ठ होने की कोशिश करना ही तरक्की है। मनुष्य श्रेष्ठ कई प्रकार से हो सकता है। 1. उत्तम गुणों को धारण करने से। 2. उत्तम कर्म करने से। 3. उत्तम स्वभाव धारण करने से। 4. उत्तम आहार, भोजन सेवन करने से जो शुद्ध शाकाहारी हो जिस भोजन में माँस, अण्डा आदि का प्रयोग न हो। 5. 'ओ३म्' स्वरूप सर्वरक्षक, सृष्टिकर्त्ता वाले अनन्त गुण सम्पन्न एक ही ईश्वर को मानने से व्यक्ति श्रेष्ठ हो सकता है।

8. मानव-जीवन का उद्देश्य समझें और उसे प्राप्त करने का प्रयास करें।

मानव-जीवन की सफलता इस बात पर अधिक निर्भर करती है कि संसार में आकर, जीवन के उद्देश्य को गम्भीरता से समझें और उसे प्राप्त करने का प्रयास करें। भारतीय संस्कृति में वेद-शास्त्रों के अनुसार मानव-जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करना माना है। वेदों के आचार्य महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सन्ध्या-मन्त्रों के अन्तिम चरण में लिखा है- **"हे ईश्वर! दयानिधे! भवत् कृपयानेन जपोपासनादिकर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षाणां सद्यः सिद्धि र्भवेन्नः।।"**

प्रस्तुत मन्त्र में भगवान से प्रार्थना की गई है कि हे दयाके भण्डार, महान् प्रभु! आपकी दया से, कृपा से आपके भक्त जन श्रेष्ठ कर्म जप, उपासना, योग साधना आदि कर्म करते हुए, मानव-जीवन के जो चार उत्तम फल हैं- (1. धर्म, 2. अर्थ, 3. काम और 4. मोक्ष) वे हमें इसी जीवन में अति शीघ्र प्राप्त हों। किसी कवि ने सुन्दर कहा है- "न प्रभू भूलो, न जग छोड़ो कर्म कर जिन्दगानी में। रहो दुनिया में तुम ऐसे, रहे जो कमल पानी में।।"

9. कर्मशील बनें, आलस्य प्रमाद का त्याग करें - मानव-प्राणी को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए कर्मशील बनना है। उद्यम करना है। परिश्रमी बनना है। **"कर्म प्रधान विश्व रचि राखा। जो जस करे, सो तस फल चाखा।।"**

इस संसार में सारा कर्मों का ही तो खेल है। कुछ लोग अपनी कर्म कुशलता से जीवन के सर्वोत्तम फल मोक्षानन्द को भी पा लेते हैं लेकिन कुछ लोग अपने कुकर्मों से, अपने रूखे, कर्कश दुर्व्यवहार से निष्फलता की ओर चले जाते हैं।

अतः मानव-जीवन की सफलता के रहस्य को समझें। मानव-जीवन को श्रेष्ठ बनायें, सुख और शान्ति के उपाय खोजें। सफल और आदर्श-जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्तियों से कुछ शिक्षा-ग्रहण करें। अच्छे स्वास्थ्य के लिए व्यायाम अवश्य करें। अपने आचरण को, व्यवहार को एवं चरित्र को श्रेष्ठ बनायें। अपने जीवन के लक्ष्य प्राप्ति के लिए योग-साधना, ईश्वर का ध्यान, मनन-चिन्तन करें। धन का अर्जन, प्रयोग सावधानी से करें, धन सब कुछ नहीं है। इसलिये धन को दूसरों की सहायता में, यज्ञादि श्रेष्ठ कार्यों में, दान में प्रयोग करते हुए अपने जीवन को सुखी बनाने में धन का त्याग-वृत्ति से भोग करें। आज का कार्य कल पर न छोड़ें। प्रसिद्ध कहावत है- **"शुभं कार्यं शीघ्रं कुरु"** अर्थात्- जिस कार्य को आप अच्छा मानते हैं, शुभ मानते हैं, उस कार्य को यथा शीघ्र आरम्भ कर देना चाहिए। अधिक समय तक नहीं टालना चाहिए। इन उपायों को अपनाने से निश्चय ही सफलता प्राप्त होगी। कविवर प्रकाश की ये पंक्तियाँ हमें प्रेरणा देती हैं- "बैठा क्यों हाथ पै हाथ धरे, मुखड़े पर छायी क्यों घोर उदासी। शक्ति निधान महान् है तू, यह जान करा न जहान में हाँसी। अन्तर तेरे प्रवाहित है सुख, स्रोत निरन्तर बारहमासी। व्याकुल तू फिर भी है प्रकाश। अचम्भा ये पानी में मीन है प्यासी।।

-44ऐ, दुसरी मंजिल, फेस-2
विकासनगर, नई दिल्ली

thearyasamaj.org

ओ३म् क्रतो स्मर

– उमा बजाज

हे जीव तू ओ३म् का सिमरन कर।
जाएगा जब यहाँ से कुछ न पास होगा।
दो गज कफन का टुकड़ा
तेरा लिबास होगा।
मतलब की है यह दुनियां
क्या अपना और क्या पराया।
कोई न साथ आया
कोई न साथ जाए।
यह ठाठ बाठ तेरा यह आन बान तेरी।
रह जाएगी मुसाफिर तब
सारी शान तेरी।
इतनी सी मुसाफिर बस दास्तान तेरी ।।

मनुष्य की क्षमता घटने पर सभी उसे छोड़ देते हैं। जब तक तुम्हारे अन्दर धन कमाने और बचाने की शक्ति है तब तक तुम्हारे आश्रित तुम से चिपके रहेंगे। जब तुम बूढे हो जाओगे और शरीर निर्बल हो जायेगा तब तुम्हारे घर का कोई भी व्यक्ति तुम से बात नहीं करना चाहेगा, मनुष्य का जीवन चाहे जैसी भी हो जितना भी बलवान हो। क्षमता और शक्ति तो समाप्त होना ही है क्योंकि वृद्धावस्था शारीरिक और मानिसक सामर्थ्य को अवश्य क्षीण करेगी इस लिये बुद्धिमान वो है जो शरीर और सामर्थ्य के होते जितना हो सके दान, भजन, स्नेह, प्रेम को फैलाये थोड़ा सोचो जब तुम्हें दुःख मिलता है तो तुम किसी को जिम्मेदार ठहराते हो यदि पति दुःखी है तो पत्नी को जिम्मेदार ठहराता है यदि पत्नी दुःखी है तो बेटे को या पति को जिम्मेदार ठहराती है लेकिन बड़े मजे की बात है तुम जब भी दुःखी हो तो अपने आस पास जिम्मेवारी किसी के कंधे पर टांग देते हो और जब तुम सुखी हो तो तब तुम मानते हो कि मेरे ही कारण मैं सुखी हूँ यह बड़े कमाल की बात है ।

इसी कारण न तुम दुःख का हल कर पाते हो और न तुम सुख का राज खोज सकते हो क्योंकि दोनों हालात में तुम गलत हो, इन दोनों सुख और दुःख के पीछे परमात्मा है वो हमारे कर्म अनुसार हमें सुख और दुःख देता है जिस दिन तुम यह समझ लोगे कि सुख भी उसका दुःख भी उसका, सुख, दुःख दोनों का रूप खो जायेगा न सुख सुख जैसा लगेगा न दुःख दुःख जैसा लगेगा, और जिस दिन सुख दुःख एक हो जायेंगे उसी दिन आनन्द की घटना घटती है याद रखो कभी किसी को दोषी मत ठहरायो कि वो मुझे कष्ट दे रहा है और जब सफलता मिले तो यह मत कहना कि मैंने यह सुख उपजाआ यह मन में आते ही अंहकार जाग उठता है। अहंकार मत करना सब सफलताओं सब स्वादिष्ठ फलों का मालिक भी वहीं है अगर तुम सब उसी पर छोड़ दो तो सब खो जायेगा केवल आनन्द आनन्द शेष रह जाता है, यह सार की बात है यह समझ लो सब उसी का है।

जब कोई गाली देता है तो पीड़ा होती है, पीड़ा अंहकार की होती है, तुम इस अंहकार को छोड़ना भी चाहते हो लेकिन कोई फूल माला पहनाता है तब अंहकार को सुख मिलता है इसी तरह लोग निंदा करते हैं तो निंदा अखरती है, प्रशंसा सुख देती है लोग गुणगान करते हैं बड़ा भला लगता है दोनों ही घंटनाएँ अहंकार पर घर रही है और तुम्हारी मुसीबत यह है यदि तुम अंहकार छोड़ो तो दुःख भी मिट जायेगा सुख का भी भान न होगा, कर्मों को कर्त्तव्य समझ कर करें, उन्हें तथा उनके फल को ईश्वर को अर्पित कर दो दूसरों को दुःख देने से मन सदा अप्रसन्न रहता है। जब भक्त ईश्वर के प्यार में रोता है तो उसके पाप यू झड़ जाते हैं जैसे वृक्षों से पत्ते झड़ जाते हैं।

दुःख न किसी की दिया करो,
आह न किसी की लिया करो जो दुनियां
का मालिक है नाम उसी का लिया करो,
नाम उसी का लिया करो।

यह बड़ा महत्वपूर्ण वचन है जीवन वही देता है, श्वास वही चलाता है, धड़कन भी वही धड़काता है वो देता है देता ही चला जाता है उसके देने में कोई पारावार नहीं है वह दयालु बदले में हम से कुछ मांगता भी नहीं है इसी लिये तो जीवन तुम्हें सस्ता मालूम होता है और चीज़ें गंहगी मालूम पड़ती हैं, जो ईश्वर जो भी देता है बिल्कुल मुफ्त देता है तुम्हें यह अहसास होना चाहिये कि ईश्वर ने तुम्हें जो अनमोल रत्न दिया प्रार्थना के रूप में उसका धन्यवाद करो।

प्रार्थना कब करोगे पूजा कब शुरु होगी क्योंकि मांग का कोई अन्त नहीं एक मांग पूरी होती है तो दूसरी खड़ी हो जाती है वो तो दानी है वो देता ही जाता है, प्रार्थना उस दिन शुरुँ हो जब तुम कहोगे मैं क्या कहूँ कैसे धन्यवाद करुँ, मैं तेरे दर पर आ गया हूँ तेरा ऋण कैसे चुकाऊँ प्रभु दानी दाता तू तो हर पल देता ही जाता। देने वाले तू इतना महान है तू देते–देते थकता भी नहीं है तेरी मेहेरबानी का है बोझ इतना कि जिसे मैं चुकाने के काबिल नहीं हूँ।

मेरे दानीं तेरे चरणों में कैसे आऊँ यदि फूल भी लाती हूँ तो लगता है कि वृक्ष पर वो जीवित थे मैंने तोड़ कर उन्हें मार डाला मैं शरमिन्दा हूँ प्रभु क्या करुँ, यदि मैं कहता हूँ मैंने मन्दिर में सेवा की मन्दिर में दान दिया मन्दिर बनवाया या कुआँ खुदवाया, यह अंहकार मेरे प्रभु तुझे स्वीकार नहीं, प्रभु सब कुछ तो तेरा है।

हाँ प्रभु मैं समझ गई सब तेरा है जिस दिन यह प्रार्थना, जिस दिन यह पुकार हुई उस दिन प्रभु मुझे मालूम है मेरी भेंट स्वीकार हुई, तुम उसके हो तुमने जो कमा लिया, तुमने जो इकट्ठा कर लिया यह भी उसी का खेल है, प्रार्थना होगी प्रार्थना में सब हो जायेगा, प्रार्थना में प्रभु का प्रकाश मिलता है, उस प्रकाश में सत्य दिया है, जिस दिन तुम्हें यह मालूम होने लगेगा मैं असमर्थ हूँ असहाय हूँ, प्रार्थना में रो दोगे उसी क्षण मोक्ष का द्वार खुल जाता है। और भक्त कह उठता है ।

क्या कहूँ क्या भक्त पाता है प्रभु के ध्यान में ।
कुछ आलौकिक रस मिले जब मन लगे भगवान में।
ज्ञान के आलोक से तब जगमगाता है हृदय।
रंग बिरंगे फूल खिलते आत्मिक उद्यान में।
संशयां का नाश होता पाप के बन्धन कटे।
साधना का मार्ग मिलता आत्मिक उद्यान में।
विषय विष से ज्ञान पड़ते वासना की प्यासा।
तब ना आकर्षण कुछ काम अभिमान में।
यो लगे सर्वत्र ही आनन्द की वर्षा हो रही हो।
भक्त जब लगता मग्न ओ३म् के नाम मे।
पाल गूंगा किस तरह गुड की मधुरता कह सके।
मधुरता अनुभूति रहती मगर उसके ध्यान में।

–राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली–60

thearyasamaj.org

R.N. DEL BIL/2007/22120
DL (C)-14/1181/2011-2013

Date of Posting 12 & 13, at S.R.T. Nagar, Post Office, ND-55

ओ३म्

ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई?

ओं हिरण्यगर्भः समर्वतताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

आज का मजमून (विषय) है कि परमात्मा ने दुनिया क्यों पैदा की? कई बार यह सवाल मेरे समाने आया है और हत्तुलवसा (यथा शक्ति) प्रयत्न किया है मैं उनके इस सम्बन्ध में तसल्ली बख्श उत्तर दूं। आज भी हमारे एक मेहरबान ने कहा कि "दिल में मेरे यह ख्याल उत्पन्न होता है कि जब वह अपने आप में कोई कमी नहीं रखता पूर्ण है। (पर्फेक्ट) है, तो दुनिया क्यों बनावे? "मैंने कहा" यही दलील बनाने की जरुरत को साबित करती है यानी उसका हर तरह पूर्ण होना।

आप कहेंगे कैसे? जिसके अन्दर कोई ख्वाहिश नहीं, कोई इच्छा नहीं, कोई कमी नहीं लेकिन पूणता है हर प्रकार की। इल्म भी उसका पूरा है, शक्ति भी उसमें पूरी है, और व्यापकता भी उसकी पूरी है, तीनों प्रकार से जो पूरा है यानी परमात्मा तो बतलाइये वह अपनी इस पूर्णता को किस प्रकार सफल करे? अपने इस कमाल को किस प्रकार से नाकार करे? क्योंकि किसी शय का होना महज होने के लिए हो तो उसका होना न होना बराबर होता है– जरा गौर कीजिए मेरे अल्फाज़ (शब्दों) पर परमात्मा पूर्ण है। अपनी पूर्णता का क्या लाभ? अपने पूरे आलिम होने क्या फायदा? बल्ब से प्रकाश हमें मिलता है– हम पूछते हैं कि इसका इसके अलावा–कोई और लाभ है कि आपको रोशनी दे रहा है? पूर्णता का होना इसी चीज़ में पूरा होगा कि जितना ज्यादा फायदा उसकी पूर्णता यानी कमाल से दूसरे को हो जाये उतना उसका वजूद सफल है और जितना पहुंचे उतना ही असफल है। मिसाल के तौर पर अगर एक बड़ा हकीम है। लेकिन बीमार कोई नही है दुनिया में और न दवाईयां हैं तो मुझे बताइए कि हकीम के होने का क्या फायदा है? जब कोई मरीज़ नहीं है और कोई दवा नहीं है तो किसके लिये दवा दे और क्या दे? इसलिये विद्वान लोगों ने कहा है कि जो अपने अन्दर कोई गुण रखता है, उस गुण की सफलता अन्यों को लाभ पहुचाने में है। अपनी गरज तो हम पूरी करते ही है लेकिन अपने कमाल से गैरों की गरज को पूरा करना और उनके लिये सहारा बनना यह ऊचें दर्जे की चीज़ है। एक अंग्रेजी का बहुत छोटा सा जुमला है (एव्री आपचनिटी टु हेल्प इज ए डयटी) प्रत्येक अवसर जो हमें सहायता का मिल जाए, वह हमारा कर्त्तव्य है क्योंकि हम अपने गुण से कुछ तो फायदा पहुचाए, अपने कमाल से उसको लाभान्वित करें। तो वह क्या करेगा? जहां वह अपना होना सफल करेगा वहा उसका जीवन मार्ग सफल हो जाएगा जिसकी वह मदद करेगा। मेरा लिखना तब सफल होगा है जब पढ़ने वाले हों। परमात्मा आलिमे कुल है। इल्म हमेशा जाहिलों में सफल होता है। ताकत हमेशा कमजोरों की रक्षा में सफल होती है याद रखिए! और रोशनी हमेशा अंधेरे में सफल होती है, जहां अंधेरा है वहीं उसको ले जाइए वहां सफल हो जाएगी। परमात्मा हमेशा से जानता है इस बात को कि मेरा अपना इल्म सफल जीवात्मा को ज्ञान देने में ही है। मैं तो केवल इतना कह सकता हूँ कि जीवात्मा न हो और प्रकृति न होती ईश्वर भी नहीं होगा बल्कि न होने के बराबर होगा किसके लिए होगा फिर यह? अगर प्रकृति नहीं तो अपनी कारीगरी काहे में दिखाए? इस लिए परमात्मा ने अपनी कारीगरी को जाहिर किया प्रकृति के जरिये से और अपने इल्म को जाहिर किया जीवात्मा के जरिए से। इस वास्ते इस बिना पर कि परमात्मा के पास हमेशा से जीवात्मा है और प्रकृति भी हमेशा से है, यह देखकर वह खाली कैसे बैठा रहे? खाली बैठने के लिए लोग क्या कहा करते है? (एन आइजल माइन्ड इज ए डेविल्ज वर्कशाप) खाली बैठना शैतान की दुकान है।

तो ईश्वर ने जगत क्यो उत्पन्न किया? अब कहना चाहिए कि जीवात्मा के लाभ के लिये जीवात्मा की तरक्की के लिये अपने लिये नहीं। हां अपना होना सफल यूं हुआ वना परमात्मा का होना सफल नहीं होता यह खयाल या प्रश्न ईश्वर ने दुनिया क्यों बनाई यह इसलिए पैदा होता है कि इस दुनिया में आदमी जो भी काम करता है अपनी गरज को लेकर करता है। तो लोगों ने इसी आधार पर ईश्वर के बारे में भी सोचा और ख्याल किया कि ईश्वर की भी दुनिया की उत्पत्ति में गरज है। मैं कहता हूँ कि दुनिया के बनाने में खुदा की कोई गरज नहीं है और यदि कोई प्रेरणा है तो यही है कि अगर मैंने अपने इल्म को अपनी कारीगरी को दुनिया में जाहिर न किया तो मैं निकम्मा रहूंगा। यही एक कारण है जिसकी वजह से ईश्वर जगत को अनन्तकाल से उत्पन्न करता चला आ रहा है। यह सिल सिला अटूट है।

मेरा यह प्रयास स्वाध्याय क बिना है। मैंने अपनी बुद्धि से काम नहीं लिया है। क्योंकि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने ऋग्वेदादि भाष्यभूमिक में लिखा है जो केवल अपनी बुद्धि स कहता है वह ठीक ठीक नहीं हो सकता और जो कोई वेदों के अनुकूल अर्थात् आत्मा की शुद्धि, आप्त पुरुषों के ग्रन्थों का बोध और उनकी शिक्षा से वेदों को यथावत् जान के कहता है, उसका वचन सत्य ही होता है।

–नारायण दास प्रयासी
4बी–22, 4 एफ, ओल्ड राजेन्द्र नगर

वेद व्यास डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, विकास पुरी, नई दिल्ली द्वारा आयोजित वैदिक ज्ञानार्जन एवं संस्कार यात्रा

डी.ए.वी. प्रबंधक समिति के यशस्वी प्रधान 'श्रीमान पूनम सूरी जी' की प्रेरणा तथा डॉ. निशा पेशिन जी निदेशिका डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के मार्ग दर्शन एवं राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित प्रिं. चित्रा नाकरा जी की अध्यक्षता में तथा नीरज ज्योति जी के संयोजकत्व में वेद व्यास डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, विकास पुरी, नई दिल्ली के 27 प्रतिभा सम्पन्न छात्रों ने 27 सितम्बर से अपने विद्वान आचार्यों के सान्निध्य में वैदिक ज्ञानार्जन एवं यात्रा से अपनी संस्कृति, संस्कारों, मूल्यों से जुड़ने का गहराई से प्रयास किया।

इतिहास से विदित होता है कि अनेक ऋषि मुनिओं की तरह स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी जैसे प्रख्यात शिक्षाविद भी अपने कुछ अति विशिष्ठ, मेधा सम्पन्न छात्रों के साथ ऐसी ज्ञानार्जन यात्रायें करते रहे हैं। 1 अक्तूबर 2014 को इस यात्रा का समापन हुआ। लेकिन इस यात्रा से अर्जित ज्ञान–विज्ञान जीवन जीने की कला की महक छात्रों के मन मस्तिष्क को शिव संकल्पों की सुगंध से भरकर दिव्य संस्कारों की प्रेरणा सदा देती रहेगी ।

Printed and published by **Sh. S.C. Mehta** Secretary on behalf of Arya Samaj, Rajinder Nagar and printed at Gurmat Printing Press, 1337, Sangatrashan, Pahar Ganj, New Delhi-55 Ph. : 23561625 and published at Arya Samaj, Rajinder Nagar, New Delhi-110060. ***Editor :* Dr. Kailash Chandra Shastri**